IJIRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 10, Issue 9, September 2021

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 7.569

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 9, September 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1009127 |

महाराणा प्रताप की स्वाधीनता पर विचारधारा व योगदान

चंद्रपाल जांदू

इतिहास, डॉ. भीमराव अंबेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर

सार

महाराणा प्रताप को मैं देश का प्रथम स्वतंत्रता सेनानी योद्धा मानता हूं। स्वाधीनता संघर्ष के वे ऐसे नायक थे, जिन्होंने मातृभूमि की आजादी के लिए राज-पाट का वैभव त्याग कर अरावली की घाटियों और दुर्गम वनों में रहना स्वीकार किया। राष्ट्र की आजादी की शर्तों पर उन्होंने कभी अपना सिर नहीं झुकाया। राजस्थान के इतिहास में सर्वाधिक गौरवपूर्ण इतिहास मेवाड़ का रहा है। यहां के शासकों ने अपने कुल गौरव, स्वाभिमान, जनमानस की स्वतंत्रता के लिये मुगल साम्राज्य का वीरतापूर्वक मुकाबला किया और स्वतंत्रता को अक्षुण्य बनाये रखा। परन्तु मेवाड़ की इस स्वतंत्रता को अलाउद्दीन खिलजी ने अवश्य ही धक्का पहुंचाया। लेकिन राणा हमीर ने पुनः चितौड़ पर अधिकार उस पौधे को नवांकुरित किया, राणा कुंभा ने उसे सींचकर हरा भरा पुष् दल संयुक्त उन्नत तरवर बनाया और राणा सांगा उसमें फल लाया तथा प्रताप उसका सजग प्रहरी बना।ऐसे महान् वीर और देशभक्त प्रताप का जन्म मई 9, 1540 ई. को कुंभलमेर में हुआ था। सन् 1572 ई. में अपने पिता महाराणा उदयसिंह की मृत्यु के बाद प्रताप मेवाड़ पर सिंहासनरूढ़ हुआ।

उस समय मुगल साम्राज्य का बादशाह अकबर था जो राज्यश्री के यौवन से उन्मुक्त होकर साम्राज्य विस्तार के पथ पर अग्रसर हो रहा था। लेकिन महाराणा प्रताप को वश में किये बिना सम्पूर्ण कार्य अपूर्ण ही था। महाराणा प्रताप ने दृढ़तापूर्वक मुगल विरोधी नीति को अपनाकर उसे कार्यान्वित करने का संकल्प लिया। प्रताप की दृष्टि में अकबर, बाबर के ही समान एक सफल विदेशी आक्रमक से अधिक नहीं था। अतः एक देशभक्त, स्वतंत्रता प्रेमी और स्वाभिमान उसकी अधीनता कैसे स्वीकार कर सकता था ?उधर अकबर ने सर्वप्रथम तीन शिष्ट मण्डल कुं. मानसिंह कच्छवाहा, राजा भगवन्तदास, राजा टोडरमल के नेतृत्व में भेजकर प्रताप को अधीनता स्वीकार करने के लिये राजी कर उस नवांकुरित पौधे पर अनाधिकार अधिकार करने की चेष्टा की। परन्तु असफल रहने पर उसने युद्ध का सहारा लिया। फलतः 18 जून, 1576 ई. इतिहास का प्रसिद्ध हल्दीघाटी का निर्णायक युद्ध हुआ। युद्ध में अपनी स्थिति को कमजोर देखते हुए प्रताप ने त्वरित बुद्धि से काम लिया और अन्त में युद्ध का मैदान छोड़कर कुम्भमेर के विकट पहाड़ों में चला गया और वहां से मुगल सेना से युद्ध जारी रखने के लिये छापामार युद्ध प्रणाली प्रारम्भ की।

परिचय

हल्दीघाटी के युद्ध के बाद गोगुन्दा में रहते हुए भी मुगल शाही सेना को जानवरों का मांस व आम के फलों पर अपना निर्वाह करना पड़ा। लेकिन उससे राज्यश्री से उन्मत्त मुगल बादशाह अकबर निराश नहीं होने वाला था। उसने स्वयं प्रताप का मुकाबला करने का विचार कर सितम्बर, 1576 ई. में शिकार का बहान बना गोगुन्दा की ओर आया, लेकिन प्रताप की नयी युद्ध प्रणाली के कारण वह प्रताप को वश में नहीं कर सका और 6 महीने मेवाड़ में रहने के तदोपरांत बांसवाड़ा होता हुआ गुजरात की ओर चला गया। मेवाड़ में होकर अकबर के यों ससैन्य गुजर जाने के बाद भी वहां स्थायी रूपेण शांति स्थापित करने में मुग़ल सेना को अत्यावश्यक सफलता नहीं मिली | अत: सन 1577 में शाहबाज खां ससैन्य मेवाड़ कि और भेजा गया लेकिन परिणाम शून्य ही रहा। तब 1580 ई. में अब्दुल रहीम खानखाना को भेजा गया। कुंवर अमरसिंह ने शेरपुर नामक स्थान पर एक अचानक आक्रमण कर खानखाना के हरम पर भी कब्जा कर लिया, लेकिन धर्म रक्षक प्रताप के आदेशानुसार मुगल स्त्रियों को पुनः खानखाना के पास ससम्मान पहुँचा दिया गया। यो 1576 ई. से लगातार 1586 ई. तक अकबर ने मेवाड़ पर अधिकार करने के लिए विभिन्न सेनापतियों के नेतृत्व में सेना भेजी लेकिन उसे कोई विशेष सफलता नहीं मिली और प्रताप ने एक नयी युद्ध प्रणाली के साथ साथ मारवाड़ से सांठ-गांठ की और बूंदी में भोज व दूदा के वैमनस्य से लाभ उठाकर[1,2] अकबर को बूंदी में भी व्यस्त रखा। इस प्रकार अकबर एक संगठन को तोड़ता तो प्रताप दूसरा संगठन बना लेता था।सन् 1586 ई. के बाद अकबर ने किसी सेनानायक को मेवाड़ की ओर नहीं भेजा और प्रताप ने इस अवसर का लाभ उठाया व धीरे-धीरे अपने खोये हुए राज्य पर पुनः अधिकार करने लगा। देहान्त के समय तक चित्तौड़ और मांडलगढ़ के किलों पर उनसे पूर्व के प्रदेशों के अतिरिक्त शेष सारा मेवाड़ राज्य उसने अपने अधीन कर लिया।इस प्रकार महाराणा प्रताप न अन्त तक अपने दृढ़ निश्चय का पालन किया और अनेकों कठिनाईयों, कष्टो एवं पराजयों को निरन्तर सहते रहने पर भी उसने प्राण रहते अकबर की आंशिक अधीनता तक स्वीकार नहीं की। एक विदेशी विजेता का यों विरोध कर अपने परम्परागत मेवाड़ राज्य की स्वाधीनता को अक्षुण्ण बनाये रखना ही उसने परम कर्तव्य समझा।महाराणा प्रताप ने आजीवन अकबर का विरोध किया और प्रण रहते मुगल बादशाह अकबर का आंशिक आधीनता भी स्वीकार नहीं की। उसने मेवाड़ की स्वाधीनता और प्रतिष्ठा को अक्षुण्ण बनाये रखा। प्रताप

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 9, September 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1009127 |

का यह विरोध मुख्यतः अकबर के उग्र मुगल साम्राज्य से था। अतः प्रताप मेवाड़ का लोकप्रिय नेता और एक मात्र प्रतिनिधि बन गया। तभी तो अकबर का कृपापात्र सुकवि पृथ्वीराज राठौड़ ने माताओं से अभ्यर्थना की थी।[3,4]

"माई एहा पूत जण, ऐहा राणा प्रताप।
अकबर सूतो औधके, जाण सिराणै प्रताप।।' '
यहीं नहीं दुरसा आढ़ा ने अकबर को सम्बोधित कर लिखा कि-
"अकबर गरब ने आण, हींदू सह चाकर हुआ।
दीढो कोई दीवाण, करतो लटका कर हडै।।' '

यों राजपूताना के अधिकांश शासक मुगल अधीनता स्वीकर करते जा रहे थे ऐसी स्थिति में मेवाड़ का महाराणा प्रताप ही आाशा की किरण था। अतः उसके स्वदेश प्रेम, त्याग और बलिदान तथा स्वतंत्रता सैनानी के रूप में सकालीन कवियों ने प्रस्तुत कर जन मानस में जन चेतना जागृत करने का प्रयास किया लेकिन प्रताप के पुत्र अमरसिंह को मजबूर होकर मुगल साम्राज्य की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी और महाराणा प्रताप की मृत्यु के बाद तो मेवाड़ में भी अंधकार छा गया।भारत पर अंग्रेजों का पूर्ण आधिपत्य हो जाने पर पराधीनता की ओर अन्छकारपूर्ण रात्रि में जब राजस्थान सुख शांति की विमोहक नींद से बेसुध पड़ाप था तब स्वाधीनता स्नेहसिक्त बातियां भारत में मत्र-तत्र जलती रही। सन् 1857 ई. में प्रज्ज्वलित स्वतंत्रता संग्राम की अग्नि को बड़ी कड़ाई और निर्दयतापूर्ण सैनिक कार्यवाहियों द्वारा यथा संभव शांत कर दिया गया था।किन्तु सम्पूर्ण भारत में अंग्रेजी भाषा और शिक्षा प्रणाली के अधिकाधिक प्रसार से स्वाधीनता प्राप्ति की लालसा को अप्रत्यक्ष रूप से बल मिला। इस कार्य में कर्नल जेम्स टॉड का विशेष और महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारत के अन्य प्रान्तों के अंग्रेजी भाषा विदों ने जब टॉड कृत ''एनाल्स एण्ड एण्टीक्विटिज ऑफ़ राजस्थान' ' को पढ़ा, तब तो मुगलों के साथ महाराणा प्रताप के आजीवन सफल संघर्ष की वीरगाथा सम्पूर्ण देश में फैल गयी और उससे प्रभावित होकर भारत की अनेक भाषाओं में प्रमुख साहित्यकार महाराणा प्रताप की ओर आकर्षित हुए तथा प्रताप के जीवन प्रसंगों को लेकर उन्होंने अपनी-अपनी भाषाओं में अनेक प्रेरक नाटक, उपन्यास, कहानियां और काव्य रचे।[5,6]

कर्नाटक में लि.वे. गलगनाथ कृत उपन्यास "राणा प्रतापसिंह" सारे कर्नाटक में लोकप्रिय हुआ था। सा. शि. मरूलय्या का "राणा" को भी रंगमंच पर बहुत ख्याति मिलि। चित्तौड़ शासकों और प्रताप के बलिदान से प्रभावित होकर ही 1824 ई. में कर्नाटक में सर्वप्रथम आजादी के लिये अंग्रेजों से कितूर चेनम्मा लड़ने को तैयार हुई थी। तदन्तर कर्नाटक् में स्वाधीनता के लिये जो संघर्ष चला उसमें स्थानीय नेताओं ने प्रताप और शिवाजी को अपना आदर्श माना है। उनके त्याग और बलिदान की गाथा को गाकर जन जागृति पैदा की। "महाराष्ट्र में भी प्रताप के जीवन के आधार पर अनेक नाटक, उपन्यास और काव्य ग्रंथों की मराठी में रचना हुई है उसमें अ.वा. करवे कृत "महाराणी प्रतापसिंह' ' , ह.कृ.कुलकर्णी कृत ''प्रतापी प्रतापसिंह' ' और ग.कृ. बोडस कृत ''राणा प्रताप' ' नाटकों की रचना तथा दुर्गादास तिवारी कृत "महाराणा प्रतापसिंह" , ना.कृ.गद्रे कृत ''महाराणा प्रतापसिंह' ' प्रबन्ध काव्य प्रमुख है। लोक हितवादी द्वारा 1892 ई. में लिखित ''उदेपुरचाइतिहास' ' इतना लोकप्रिय हुआ कि दो वर्ष में दो संस्करण प्रकाशित हो गये। यों महाराणा प्रताप पर लिखें गये 1930 ई. तक वीर रस के नाटक, उपन्यास, प्रबन्ध काव्य और ऐतिहासिक ग्रन्थों ने महाराष्ट्र के जनजीवन में नव चेतना का संचार किया और स्वतंत्रता सैनानियों भी प्रेरणा दी। तब ही तो 19वी सदी का अंतिम दशक में महाराष्ट्र में विशद आयोजन के रूप में ''गणेशोत्सव' ' मनाया जाने लगा। तब उन समारोहों के अवसर पर शिवाजी के साथ ही साथ महाराणा प्रताप का चित्र भी प्रदर्शित किया जाने लगा था।[7,8]

विचार-विमर्श

गुजराती साहित्यकारों ने भी प्रताप की देशभक्ति, स्वाभिमान, मेवाड़ की स्वतंत्रता के लिये संघर्ष पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। कवि नर्बद ने मेवाड़ के इतिहास और महाराणा प्रताप के बारे में सर्वप्रथम किन्तु संक्षिप्त जानकारी दी थी। तदन्तर गुजराती साहित्यकार प्रताप की और आकृष्ट हुए डाह्या भाई धोलशाह (1908ई.) मणि भाई पटेल, गणपतराम राजाराम भट्ट और जयन्तिलाल मेहता ने क्रमशः ''अश्रुमति' ' , ''प्रतापसिंह' ' , ''प्रताप' ' , और ''मेवाड़ का सिंह अने बीजी बाता' ' आदि नाटकों की रचना की। ''जूनी धंधादारी रंगभूमि' ' संस्था प्रताप पर लिखे नाटकों को गुजरात के अनेक नगरों में अभिनीत किये। बसंत ने ''शौर्य तर्पण' ' (1908ई.) ना. वि. ठक्कर ने 1906 ई. में हल्दीघाटी ने युद्ध और छगनलाल ने 1946 ई. में ''प्रतापी प्रताप' ' उपन्यास ग्रन्थों की रचना की।तेलगू के साहित्यकारों ने भी प्रताप को तेलगू भाषा में पर्याप्त स्थान दिया हैं लक्ष्मी नरसिम्हा कृत राजस्थान कथावली में हिन्दुस्तान के प्रमुख वीरों में प्रताप के महत्व के बारे में विस्तृत विवरण है। शिवशंकर शास्त्री ने बंगला उपन्यास राजपूत जीवन संध्या का तेलगू में अनुवाद किया था। बेदुला सत्यनारायण शास्त्री ने, श्री पद कामेश्वर राव और जी.वी. सुब्बाराव ने राणा प्रताप पर नाटक लिखें। यों प्रोफेसर के.वी.आर. नरसिम्हा के अनुसार महाराणा प्रताप हमारे स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के अग्रज है। उनके जीवन पर लिखे गए नाटक, उपन्यास आदि से स्वतंत्रता सेनानियों को प्रेरणा मिलि है।टॉड कृत ''एनाल्स एण्ड एण्टीक्विटिज आॅफ राजस्थान' ' का सर्वप्रथम बंगाल के शिक्षाविद और साहित्यकारों ने अध्ययन किया। टॉड द्वारा प्रताप पर लिखे रोचक विवरण को बंगाल के लेखकों को सर्वाधिक प्रभावित किया। बंगाल के सर्वप्रथम के.दास गुप्ता ने टॉड के आधार पर ''राजपूत काहेनी' ' ग्रन्थ की बंग्ला भाषा में रचना

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 9, September 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1009127 |

की उसमें राजपूताना के प्रमुख शासकों का विवरण है। तदनन्तर रमेशचन्द्र दत्त ने 1879 ई. में ''राजपूत जीवन संध्या' ' उपन्यास की रचना की। यह उपन्यास प्रताप को ही प्रमुख पात्र बनाकर लिखा गया है। हरनचन्द्र रक्षित और दामोदर मुखर्जी ने भी प्रताप को आधार बनाकर उपन्यास लिखे। ये तिनों उपन्यास बंगाल में बहुत लोकप्रिय हुए।[9,10]

1879 ई. में ज्योतिन्द्रनाथ टैगोर ने ''अश्रुमति' ' नाटक की रचना की। 1905 ई. में द्विजेन्द्रलाल राय ने ''राणा प्रताप' ' नाटक लिखा। इसमें महाराणा प्रताप का चित्तौड़ का छोड़ना, कुंभलमेर के पहाड़ों में निवास, अकबर द्वारा प्रताप को आधीनता स्वीकार करने हेतु दबाव और अन्त में हल्दीघाटी का युद्ध, मानसिंह के मनमुटाव, प्रताप के भाई की भूमिका आदि का विवरण दिया गया है। एस. मुखोपाध्याय के अनुसार “It is one of those works of Bengali literature, which evoked real partriotism in the hearts of the people of Bengal”इस प्रकार महाराणा प्रताप की वह वीर गाथा भारत गुजरात, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, महाराष्ट्र और बंगाल जैसे दूरस्थ प्रदेशों के जनसाधारण में फैल गयी और स्वाधीनता एवं स्वतंत्रता की साधना के लिये प्रेरित कर तदर्थ बलिदान करने के लिये उन्हें उद्यत कर दिया।यह मान्यता भी निराधार है कि राजस्थान के स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों को महाराणा प्रताप से कोई प्रेरणा नहीं मिली है। क्योंकि बारहठ केशरीसिंह स्वयं क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानी था और महाराणा प्रताप से पूर्णतया प्रभावित था तभी तो मेवाड़ के तत्कालीन स्वाभिमानी महाराणा प्रताप फतहसिंह को 1903 ई. के दिल्ली दरबार में सम्मिलित होने से विमुख करने हेतु ''चेतावनी का चूंगटिया' ' लेते हुए उसे लिख भेजा था-[11,12]

' 'पग-पग भम्या पहाड़, धरा छोड़ राख्यों धरम।
इन्सू महाराणा र मेवाड़, हिरदे वासिया हिंद रे।।
धण धलिया धमसांणा (तोई) राण सदा रहिया निडर।
(अब) पेखतां फरमाणं, हलचल किम फतमल हुवे।।' ' [29,30]
(भावार्थ – पांव पैदल पहाड़ो में विचरते रहे, धरती गंवा कर भी उन्होंने अपना धर्म रखा, इसी कारण महाराणा, और मेवाड़ भारत देश के हृदय में बस गये। अत्यधिक घमासान युद्ध के समय भी राणा सदैव निडर रहे, अब अंग्रेजों का फरमान देखते ही महाराणा फतहसिंह यह हलचल क्यों मच गयी हैं।)अंग्रेजी साम्राज्य से स्वतंत्रता के लिये संघर्ष करने वाले क्रांतिकारियों ने भी महाराणा प्रताप के जीवन तथा आदर्श से प्रेरणा ली। अतः अंग्रेजी शासन के पुलिस दल के साथ उड़ीसा में बुढ़ी बलम नदी के तट पर हुए यतीन मुखर्जी (बाबा जतीन) और उसके साथियों के संघर्ष को बंगला के सुविख्यात कवि काजी नजरूल इस्लाम ने उस स्थान को ''नव भारत्तेर हल्दीघाटी' ' कहा है। यों महाराणा प्रताप से प्रेरणा लेकर स्वाधीनता संग्राम के सेनानियों ने स्थान-स्थान पर अनेक नव भारत्तेर हल्दीघाटी को अपने रक्त से सींचा। इस प्रकार विदेशी अंग्रेज शासकों से लड़ने वाले भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों को सतत् हिम्मत बंधाते रहे। यही महाराणा की सबसे बड़ी देन है।[13,14]

परिणाम

महाराणा प्रताप का जन्म 9 मई, 1540 ईस्वी को राजस्थान के कुंभलगढ़ दुर्ग में हुआ था। लेकिन उनकी जयंती हिन्दी तिथि के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया को मनाई जाती है। उनके पिता महाराजा उदयसिंह और माता राणी जीवत कंवर थीं। वे राणा सांगा के पौत्र थे।[27,28] महाराणा प्रताप को बचपन में सभी 'कीका' नाम लेकर पुकारा करते थे। महाराणा प्रताप की जयंती विक्रमी संवत कैलेंडर के अनुसार प्रतिवर्ष ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष तृतीया को मनाई जाती है। महाराणा प्रताप का राज्याभिषेक गोगुंदा में हुआ था। राणा प्रताप के पिता उदयसिंह ने अकबर से भयभीत होकर मेवाड़ त्याग कर अरावली पर्वत पर डेरा डाला और उदयपुर को अपनी नई राजधानी बनाया था। हालांकि तब मेवाड़ भी उनके अधीन ही था। महाराणा उदयसिंह ने अपनी मृत्यु के समय अपने छोटे पुत्र को गद्दी सौंप दी थी जोकि नियमों के विरुद्ध था। उदयसिंह की मृत्यु के बाद राजपूत सरदारों ने मिलकर 1628 फाल्गुन शुक्ल 15 अर्थात 1 मार्च 1576 को महाराणा प्रताप को मेवाड़ की गद्दी पर बैठाया। महाराणा प्रताप उदयपुर, मेवाड़ में सिसोदिया राजवंश के राजा थे। उनके कुल देवता एकलिंग महादेव हैं। मेवाड़ के राणाओं के आराध्यदेव एकलिंग महादेव का मेवाड़ के इतिहास में बहुत महत्व है। एकलिंग महादेव महादेव का मंदिर उदयपुर में स्थित है। मेवाड़ के संस्थापक बप्पा रावल ने 8वीं शताब्दी में इस मंदिर का निर्माण करवाया और एकलिंग की मूर्ति की प्रतिष्ठापना की थी।उन्होंने अपनी मृत्यु के समय जगमल को राजगद्दी सौंप दी। उदयसिंह की यह नीति गलत थी, क्योंकि राजगद्दी के हकदार महाराणा प्रताप थे। प्रजा तो महाराणा प्रताप से लगाव रखती थी। जगमल को गद्दी मिलने पर जनता में विरोध और निराशा उत्पन्न हुई।[25,26] जगमल ने राज्य का शासन हाथ में लेते ही घमंडवश जनता पर अत्याचार करना शुरू कर दिया। जगमल बेहद डरपोक और भोगी-विलासी था। यह देखकर प्रताप जगमल के पास गए और समझाते हुए कहा कि क्या अत्याचार करके अपनी प्रजा को असंतुष्ट मत करो। समय बड़ा नाजुक है। अगर तुम नहीं सुधरे तो तुम्हारा और तुम्हारे राज्य का भविष्य खतरे में पड़ सकता है। जगमल ने इसे अपनी शान के खिलाफ समझा।[15,16] गुस्से में उसने कहा, 'तुम मेरे बड़े भाई हो सही, परंतु स्मरण रहे कि तुम्हें मुझे उपदेश देने का कोई अधिकार नहीं है। यहां का राजा होने के नाते मैं ये आदेश देता हूं कि तुम आज ही मेरे राज्य की सीमा से बाहर चले जाने का प्रबंध करो।'प्रताप चुपचाप वहां से चल दिए। प्रताप अपने अश्वागार में गए और घोड़े की जीन कसने की आज्ञा दी। महाराणा प्रताप के पास उनका

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 9, September 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1009127 |

सबसे प्रिय घोड़ा 'चेतक' था। महाराणा उदय सिंह के निधन के पश्चात मेवाड़ के समस्त सरदारों ने एकत्र होकर महाराणा प्रताप सिंह को राज्यगद्दी पर आसीन करवाया था। महाराणा प्रताप का राज्याभिषेक कुम्भलगढ़ के राजसिंहासन पर किया गया।[17,18]

निष्कर्ष

मुगल बादशाह अकबर ने विक्रम संवत 1635 में एक और विशाल सेना शाहबाज खान के नेतृत्व में मेवाड़ भेजी। इस विशाल सेना ने कुछ स्थानीय मदद के आधार पर वैशाख कृष्ण 12 को कुम्भलगढ़ और केलवाड़ा पर कब्जा कर लिया तथा गोगुन्दा और उदयपुर क्षेत्र में लूट-पाट की। ऐसे में महाराणा प्रताप ने विशाल सेना का मुकाबला जारी रखते हुए अंत में पहाड़ी क्षेत्रों में पनाह लेकर स्वयं को सुरक्षित रखा और चावंड पर पुन: कब्जा प्राप्त किया। शाहबाज खान आखिरकार खाली हाथ पुनः पंजाब में अकबर के पास पहुंच गया।चित्तौड़ को छोड़कर महाराणा ने अपने समस्त दुर्गों का शत्रु से पुन: उद्धार कर लिया। उदयपुर को उन्होंने अपनी राजधानी बनाया। विचलित मुगलिया सेना के घटते प्रभाव और अपनी आत्मशक्ति के बूते महाराणा ने चित्तौड़गढ़ व मांडलगढ़ के अलावा संपूर्ण मेवाड़ पर अपना राज्य पुनः स्थापित कर लिया गया।
इसके बाद मुगलों ने कई बार महाराणा प्रताप को चुनौती दी लेकिन मुगलों को मुंह की खानी पड़ी। आखिरकार, युद्ध और शिकार के दौरान लगी चोटों की वजह से महाराणा प्रताप की मृत्यु 29 जनवरी 1597 को चावंड में हुई।[19,20] भारतीय कम्युनिस्टों और अंग्रेजों ने पूरी दुनिया में सिकंदर की तरह अकबर को महान सम्राट बना रखा है, लेकिन सत्ता और धर्म के नशे में चूर अकबर की सच्चाई को आज नहीं, कल स्वीकार करना ही होगा। महान तो महाराणा प्रताप थे जिनको एक तुर्क ने भारतीय राजाओं के साथ मिलकर हर तरह से झुकाने या मौत के घाट उतारने का प्रयास किया लेकिन महाराणा प्रताप ने अपने आत्मसम्मान को बचाए रखा [23,24]और कभी भी अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की।महाराणा प्रताप ने भगवान एकलिंगजी की कसम खाकर प्रतिज्ञा ली थी कि जिंदगीभर उनके मुख से अकबर के लिए सिर्फ तुर्क ही निकलेगा और वे कभी अकबर को अपना बादशाह नहीं मानेंगे।मेवाड़ के वीर यशस्वी महाराणा प्रताप ने कभी मुगलों के इस छद्म चेहरे की अधीनता स्वीकार नहीं की। अकबर ने उन्हें समझाने के लिए चार बार शांति दूतों को अपना संदेशा लेकर भेजा था लेकिन महाराणा प्रताप ने अकबर के हर प्रस्ताव को नामंजूर कर दिया था।[21,22]

संदर्भ

1. सरकार, जदुनाथ (1994). A History of Jaipur : c. 1503 - 1938 [जयपुर का इतिहास: १५०३ से १९३८ तक]. ओरियंट लोंगमान. पृ° 83. आईऍसबीऍन 9788125003335. मूल से 23 मई 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 22 जून 2013.
2. ↑ विजय नाहर (2011). हिन्दुवा सूर्य महाराणा प्रताप. पिंकसिटी पब्लिशर्स. पृ° 275. आईऍसबीऍन 978-93-80522-45-6.
3. ↑ "महाराणा प्रताप के विषय में भारतीय इतिहास में लिखी भ्राँतियों को दूर करती विजय नाहर की पुस्तक 'हिन्दुवा सूर्य महाराणा प्रताप' की समीक्षा". web.archive.org. 2019-05-09. मूल से पुरालेखित 9 मई 2019. अभिगमन तिथि 2020-11-12.
4. ↑ Webdunia. "मेवाड़ का वीर योद्धा महाराणा प्रताप | history of maharana pratap in hindi". hindi.webdunia.com. मूल से पुरालेखित 21 अक्तूबर 2020. अभिगमन तिथि 2020-11-24.
5. ↑ "महाराणा प्रताप की जीवनी Biography of Maharana Pratap in Hindi". InfoHindi.com (अंग्रेज़ी में). 2016-06-06. अभिगमन तिथि 2020-11-24.
6. ↑ विजय नाहर (2011). हिन्दुवा सूर्य महाराणा प्रताप. पिंकसिटी पब्लिशर्स, जयपुर. पृ° 276. आईऍसबीऍन 978-93-80522-45-6.
7. ↑ "'स्वाभिमान की जंग में प्रताप ने दे डाली प्राणों की आहुति'". www.m.patrika.com. मूल से 17 मई 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 May 2019.
8. ↑ "महाराणा प्रताप को मुख्यमंत्री ममता ने दी श्रद्धांजलि". www.indias.news.com. अभिगमन तिथि 9 May 2019
9. ↑ "History of Maharana Pratap". m-hindi.webdunia.com. अभिगमन तिथि 2020-12-07.
10. ↑ विजय नाहर (2017) "हिंदुआ सूरज मेवाड़ रतन", पिंकसिटी पब्लिशर्स, राजस्थान ISBN 9789351867210
11. ↑ विजय नाहर (2011). हिन्दुवा सूर्य महाराणा प्रताप. पिंकसिटी पब्लिशर्स. पृ° 274-278. आईऍसबीऍन 978-93-80522-45-6.
12. ↑ "महाराणा प्रताप के विषय में भारतीय इतिहास में लिखी भ्रांतियों को दूर करती विजय नाहर की पुस्तक "हिंदुवा सूर्य महाराणा प्रताप" की समीक्षा". www.udaipurkiran.in. मूल से 9 मई 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 9 May 2019.
13. ↑ "एक महान वीर योद्धा – जननायक महाराणा प्रताप – MAHARANA PRATAP". www.sahityapreetam.com. मूल से 26 मई 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 26 May 2019.

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 9, September 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1009127 |

14. ↑ "ननिहाल ही नहीं, प्रताप की जन्मस्थली भी है पाली". www.bhaskar.com. मूल से 26 मई 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 10 जून 2013.
15. ↑ हुकमसिंह भाटी (1987). सोनगरा सांचोरा चौहानों का इतिहास. राजस्थानी ग्रंथागार. पृ° 106. मूल से 26 मई 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 26 मई 2019.
16. ↑ मुहतां नैणसी (1968). मारवाड़ रा परगना री विगत. राजस्थान प्राच्यविद्या संस्थान, जोधपुर. पृ° 486.
17. ↑ "महाराणा प्रताप जयंती: इतिहास के पन्नों में वीरता का पर्याय बने, अकबर की सेना को चटाई धूल". Amar Ujala. मूल से 10 मई 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2020-05-27.
18. ↑ "16 बच्चों के पिता महाराणा प्रताप अपने सीने पर लेकर चलते थे 72 किलो का कवच". aajtak.intoday.in. मूल से 14 जुलाई 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2020-05-22.
19. ↑ "महाराणा प्रताप के जीवन से जुड़ी 10 बातें". aajtak.intoday.in. मूल से 4 मार्च 2020 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2020-05-27.
20. ↑ Paliwal, Dr. Devilal (2000). Panarwa ka Solanki Rajvansh. Udaipur: Janak Prakashan. पृ° 47.
21. ↑ "4 घंटे की लड़ाई थी हल्दीघाटी, राणा ने की थी मुगलों की हालत पतली". aajtak.intoday.in. मूल से 18 जून 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2020-05-27.
22. ↑ Sarkar, Sir Jadunath (1960). Military History of India (अंग्रेज़ी में). Orient Longmans. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-0-86125-155-1.
23. ↑ "Wayback Machine". web.archive.org. 2017-09-13. मूल से पुरालेखित 13 सितंबर 2017. अभिगमन तिथि 2020-12-12.
24. ↑ Rana, Bhawan Singh (2005). Maharana Pratap (अंग्रेज़ी में). Diamond Pocket Books (P) Ltd. पपृ° 67–71. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-81-288-0825-8.
25. ↑ Rana, Dr Bhavaan Singh (1994). ana_Pratap.html?id=az1QX5x6TMQC&redir_esc=y Maharana Pratap जाँचें `|url=` मान (मदद). Diamond Pocket Books (P) Ltd. पपृ° 132-136. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-81-7182-363-5.
26. ↑ "आज वीरता के महानायक महाराणा प्रताप की जयंती". www.sanjeevnitofay.com. अभिगमन तिथि 9 May 2019.[
27. ↑ Bhattacharya, A. N. (2000). Human Geography of Mewar (अंग्रेज़ी में). Himanshu Publications. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-81-86231-90-6.
28. ↑ Gajrani, S.; Ram, Dr S. (2011). Maharana Pratap (अंग्रेज़ी में). Commonwealth Publishers. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-81-311-0314-2.
29. ↑ "Maharana Pratap Jayanti 2020 Hindi: Biography, Death, History". S A NEWS (अंग्रेज़ी में). 2020-05-21. अभिगमन तिथि 2020-05-27.
30. ↑ "Maharana Pratap's final victory was in Akbar's reaction to news of his death, says Dr Rima Hooja". The Statesman (अंग्रेज़ी में). 2018-10-27. मूल से 17 नवंबर 2020 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2020-12-11.

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor:
7.569

doi crossref

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर
NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details

www.ijirset.com